



## स्टेट ब्रीफ

## पुलिस-पीएसी कर्मियों

## ने मनाई दीपावली

दिहरी : थाना चबा पुलिस ने दीपावली पर्व को इस बार कुछ अलग अंदाज में मनाया। थाना परिसर में न सिर्फ दीप जलाए गए, बल्कि फूलता, योहार्ड और पारिवारिक माहौल में पर्व का उत्तरास देखने को मनाया। थानाध्यक्ष दिलबर ने नींगी के नेतृत्व में पुनर्निर्माण कर्मियों, होमगार्ड और पीएसी के जवानों ने मिलकर दीपावली का पर्व पारपरिक रीति-रिवाजों के साथ मनाया। थाना परिसर को दीपों और रंग-बिरंगी लाइटों से सजाया गया। कर्मियों ने अपने हाथों से व्याजन बनाए, एक-दूसरे को मिटाइ खिलाकर शुक्रकामनाएं दी। थानाध्यक्ष नींगी ने कहा कि दीपावली अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का प्रतीक है, यह ही अपने कर्मियों की निष्ठा से निभाने की प्रेरणा देती है।

## दीपावली की रात जुआ

## खेलते चार पिरपत्तार

ऋणिकेश : ऋणिकेश के रानीपेखरी पुलिस ने जुआ खेलते चार पिरपत्तारों को रंग हाथी पकड़ लिया। आरोपियों से ताश की गही और 3000 नकद बरामद हुए हैं। थाना प्रभारी विकेंद्र कुमार ने बताया कि मुखबिर की सुरक्षा पर टीम ने जाखन नदी किनारे कुछ लोग जुआ खेलते और हार-जीत की बजी लगाते पकड़ा। पूछताह में आरोपियों की शिनाख मोरापाल, आकाश, जयप्रकाश और राकेश के रूप में हुई, जो सभी उत्तर प्रदेश के निवासी बताए जा रहे हैं।

## मुख्यमंत्री धामी ने आपदा प्रभावितों संग मनाई दिवाली

सहस्रधारा के मझाड़ा गांव पहुंचे सीएम, आपदा प्रभावितों से की मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं

मुख्य संवाददाता, देहरादून



देहरादून के भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं के साथ दीपावली मनाते सीएम पुक्कर सिंह धामी। ● अमृत विचार

अमृत विचार : मुख्यमंत्री पुक्कर सिंह धामी ने आपदा प्रभावितों के साथ दीपावली का पर्व मनाया। वह बीते सोमवार को सहस्रधारा रिति मझाड़ा गांव पहुंचे। जहां उन्होंने काली गाड़, मझाड़ा गांव एवं सहस्रधारा के आपदा प्रभावितों से मुलाकात की और उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने आपदा प्रभावित क्षेत्रों में हो रहे पुनर्निर्माण कार्यों का भी निरीक्षण किया। वहां, ग्रामीणों की मांग अनुसार रिवर ट्रीनिंग और सुरक्षा दीवार निर्माण में तेजी लाने के निर्देश दिए।

सीएम ने प्रभावित परिवारों का हालचाल जाना और उन्हें हर संभव सहायता के बूँदों पर धोना पर दिलाया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार आपदा प्रभावितों के साथ पूरी मजबूती से खड़ी है। आपदा से प्रभावित हर व्यक्ति की पीड़ा, सरकार की पीड़ा है। उन्होंने कहा कि दीपावली के बूँदों को जल्द से जल्द राहत मिल सके। आपदा के कारण किसी भी परिस्थिति में बच्चों की पढ़ाई बाधित नहीं होनी चाहिए। जीवन में भी उम्मीद और मुक्कान की ज्योति जलाते रहनी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आपदा प्रभावित

वैकल्पिक आवास की व्यवस्था प्राथमिकता के आधार पर की जा रही है। साथ ही, ऐसे प्रभावित परिवार जो फिलहाल किए गए पर रह रहे हैं, उनके किए गए के भूतानान की व्यवस्था भी निर्धारित मानकों के अनुसार किया जाएगा। इस दीपावली के दीये, बर्तन एवं अन्य पारंपरिक स्वदेशी सामानों की खरीदारी की।

गढ़वाल कमिशनर विनय शंकर पांडे भूमिका अद्यता के बाद दीपावली के बूँदों से की खरीदारी : सीएम ने चक्रवाता रोड की दुकानों से की खरीदारी : सीएम ने दीपावली पर चक्रवाता रोड की स्थानीय दुकानों से मिट्टी के दीये, बर्तन एवं अन्य पारंपरिक स्वदेशी सामानों की खरीदारी की।

उन्होंने खरीदारी के दौरान डिजिटल भुगतान भुगतान किया। उन्होंने आमजन से भी आग्रह किया कि वे अधिक से अधिक स्थानीय उत्पादों और स्वदेशी वस्तुओं की खरीदारी करें, जिससे छोटे व्यवसायियों की जीवन सुधारने की सहायता मिले।

## गंगा में बहे इंजीनियर राज्यपाल गुरमीत सिंह पहुंचे केदारनाथ निरंजनपुर मंडी स्थित दुकान में लगी आग

## का नहीं लगा सुराग

संवाददाता, देहरादून

अमृत विचार : दिल्ली से दोस्तों संग उत्तराखण्ड घूमने आए सॉफ्टवेयर इंजीनियर हेमंत सोनी का पांच दिन बाद भी कोई पता नहीं चल सका। बीती 16 अक्टूबर की रात ऋषिकेश रिति निर्माणधीन बजरंग से सुते से गंगा नदी में गिरने के बाद से ही वह लापता है। इस माले को लेकर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी चिंता व्यक्त की है।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।

उन्होंने उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर स्थानीयों से दूरभाष पर बातचीत कर युक्त की तलाश में राष्ट्रीय आपदा मोरचन बल और अन्य चाचावा पर्जियों को तेजी से अधियान चलाने का आग्रह किया।



















# रंगोली

सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जनपद अमरोहा उत्तर प्रदेश का एक ऐसा नगर है, जो भौगोलिक नक्शे पर भले ही बहुत बड़ा नहीं है, परंतु इसकी स्मृतियों, साहित्यिक व सांस्कृतिक धरोहरों की गहराइयां इतनी विराट हैं कि वहां से निकले लोग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के साहित्य, सिनेमा और भावनात्मक चेतना में अपना चिरस्थायी स्थान रखते हैं। यहां की मिट्टी में शब्द, राग और रुहानियत का गहरा रंग घुला है। अमरोहा में जन्मे लेखक, फिल्म निर्देशक कमाल अमरोही और उनकी शरीके हयात 'ट्रेजेडी क्वीन' अभिनेत्री मीना कुमारी से पूरा संसार परिचित है। उर्दू अदब में सबसे चर्चित और पसंद किए जाने वाली एक शख्सियत जॉन एलिया का जन्मस्थान भी अमरोहा है। उनके कलाम से नई पीढ़ी आज भी उतना ही प्रभावित है, जितना उनके दौर में लोग उन्हें पसंद करते थे।



डॉ. पारुल तोमर  
नई दिल्ली

अमरोहा की गिलियां उर्दू तहजीब का खजाना हैं, जहां अब भी पुरानी हवलियां, इत्र, कागज और किंताबों की दुकानों से अदब की खुशबू आती है। इसी अमरोहा जनपद के नैगांवां सादात क्षेत्र के एक छोटे से गांव मध्यदूमपुर के हथकरघों में बुना हर धागा जैसे अपनी एक अलग यात्रा पर निकल पड़ा है। इसकी संकरी गिलियों में सुबह की किरणें जैसे ही उतरती हैं, हथकरघों की खट-खट वातावरण में गूँजने लगती है। यह आवाज सिर्फ कपड़ा बुनने की नहीं, बल्कि सदियों से चली आ रही एक सांस्कृतिक धड़कन की आवाज है। यहां के बुनक, जिनकी उंगलियां धागों को मानो सास लेने की लल्ली हैं। ये कपास, रेशम और जरी के तानों-बानों में पूरे अमरोहा की पहचान बुनते हैं। बुनकरों के हाथों में बारीकी और डिजाइन का अद्भुत संगम है। ये रंग-विरंगे गलीचे, चादर आदि को इस तरह कुशलता से बुनते हैं, जैसे कोई चिक्काकर अपने कैनवास पर रंग भर रहा हो। फूल-पत्तियों के पैटर्न, ज्वामितीय आकृतियां और पारपरिक नक्शे इनको अद्वितीय

पहचान देते हैं, जो कभी गांव की चौपाल और घर आंगन में बिछी चारपाई का हिस्सा बनते हैं, तो कभी हजारों मील दूर विदेश के किसी आलीशान ड्राइंग रूम के फर्श की शान बढ़ाते हैं। आज देश-विदेश में अमरोही गलीचे, चादरें, दोहरे, कुशन आदि घर-घर की पसंद बन चुके हैं।

7 अगस्त 1905 को जब स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई, तब देशवासियों ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर हथकरघा उद्योग को पुनः जीवन देना शुरू किया। यह एक सांस्कृतिक और आर्थिक विद्रोह था, जिसमें करघे पर बनी खादी सिक्के कपड़ा नहीं, बल्कि आत्मबल के प्रतीक बन गई थी। हथकरघा उद्योग महिलाओं के लिए भी आत्मनिरपत्ता का माध्यम बनकर उभरा है। गांवों की असंख्य महिलाएं, जो कभी घर की देहरी तक सीमित थीं, आज हथकरघे के माध्यम से आर्थिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ रही हैं। वे घर पर रहकर ही अपनी कला से रोजगार करा रही हैं, बच्चों को पढ़ा रही हैं, परिवार चला रही हैं।



## आर्ट गैलरी

### अमृता शेरगिल की पेटिंग 'सुमैर'

इस पेटिंग को अमृता शेरगिल ने 1936 में बनाया था। इसका शीर्षक है, 'सुमैर'। उनकी कलात्मक प्रणिकरता का एक शानदार उदाहरण है। यह पेटिंग उनकी चर्चिती बहन सुमैर का एक संवेदनशील और मनमोहक पौरैट है। इस कृति में अमृता ने यूगोपीय पोस्ट-इंप्रेशनिस्ट तकनीकों को भारतीय सौंदर्य शास्त्र के साथ मिलाया है।

सुमैर को एक हरे रंग की साड़ी में दर्शाया गया है, जिसकी जीवंतता पृष्ठभूमि के लाल और भूंके रंग के साथ एक प्रभावशाली विरोधाभास पैदा करती है। उनके चहरे पर चितनशील और उदासी के भाव हैं, जो उनकी आंतरिक भावनाओं को बड़ी संजीदगी से व्यक्त करते हैं।



अमृता के बारे में

अमृता शेरगिल भारतीय उम्रवासिंह और हंगेरियन मां एनटॉयनेट शेरगिल की बेटी थीं। वो 30 जनवरी 1913 को हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में पैदा हुईं। उनके पिता संस्कृत और फारसी के विद्वान और मां ओपेरा गायिका थीं। कला के प्रति अमृता के रुक्मिणी को देखते हुए उनके माता-पिता उहाँ पेरिस ले गए। वहां उहाँने पेटिंग की औपचारिक शिक्षा ली। 1934 में पेरिस से भारत लौटने के बाद, अमृता शेरगिल ने अपनी कला को भारतीय वास्तविकता के बीच लाने का प्रयास किया। 'सुमैर' उसी दौर का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

फोटोर डेरक

'लोके उपभोग्यं नाट्यं भवतु'। अर्थात् नाटक संसार के लिए आनंद का साधन बने। संसार के किसी भी हिस्से में, किसी भी काल में जब नाट्य विद्या का आरंभ हुआ होगा, तो उसका मूल उद्देश्य केवल संदेश देना रहा होगा या किसी विचाराधारा को प्रस्तुत करना? रंगमंच का मूल तो अपने दर्शक की आत्मा से जु़ु़कर रसों की निष्पत्ति करना है, उसके भीतर के वे सारे भाव, जो समाज द्वारा प्रदूषित कर दिए गए हैं, उनकी शुद्धि करना है।

हाल के वर्षों में नाटक लोगों की राजनीतिक पसंद-नापसंद और उनके निजी एजेंडों पर अधिक निर्भर हो गया है। यह पूरे देश के नाटकों में अनुभव किया जा सकता है। चिंता की बात यह है कि दर्शकों की घटनी संख्या पर न तो कोई ध्यान दे रहा है, न ही उसके समाधान पर विचार कर रहा है। नाटक का मूल उद्देश्य केवल राजनीतिक टिप्पणी या सामाजिक संदेश देना मात्र नहीं है। यदि यह साथ में हो पाए तो बहुत अच्छा, लेकिन मूल तो अपने दर्शक के भीतर पैदा होने का उद्देश्य करना और उसकी आत्मा को संरक्षण करना है।

भारतमुनि का कहना है, "नाट्यं भिन्नरूपं लोकवृत्तानुकीर्तनम्।" अर्थात् नाटक मनुष्य के जीवन का अनुकरण है। वहीं अरस्तू का कहना है, नाटक किसी किया का अनुकरण है, जिसका उद्देश्य करणा और भय के माध्यम से आत्मशुद्धि करना है। दो महान व्यक्ति, जो समय और संस्कृति में पूरी तरह अलग हैं, दोनों एक ही बात कह रहे हैं, "पहले भाव को छुओं, विचार अपने आप जन्म लें।" आजकल नाटकों में हम देखते हैं कि अधिनेता अपने नाटक के लेखक या निर्देशक के निजी विचारों, उनकी राजनीतिक पसंद-नापसंद को अलग-अलग तरीकों से अभिव्यक्त कर रहे होते हैं। इस प्रकार भाव पर विचार हाजी हो जाता है।

# ताने-बाने भें बसी कला और कौशल

## संस्कृति व परंपरा

हथकरघा समय, मेहनत, कौशल, संस्कृति और परंपरा का यह जीवंत दस्तावेज है, जिसमें गांव-गांव की सांसें, रंग और लय बसी हुई है। लकड़ी के चूंचटे पर बैठा बुनकर जब पैडल दबाता है और शटल को बारी-बारी से इधर-उधर धमाता है, तो उसके हाथों की गति में केवल कपड़ा नहीं, बल्कि पीढ़ियों का अनुभव और स्मृति गुन्ठने में लगती है। एक-एक धागा जैसे किसी पुरानी कालीन का अक्षर होता है और कपड़ा उसका

बल्कि मानवता के बुनियादी मूल्यों का भी करधा है, जो हमें जोड़ता है, संवारता है और हमें हमारी जड़ों से बांधता है।

आज मशीनों की तेज रफ्तार और बाजार की आर्टिफिशियल चमक-धमक के आगे यह धीमा, मेहनत-भरा शिल्प दम तोड़ रहा है। जिस कपड़े में कभी किसान का त्रमजल, बुनकर के हाथों की महक और रंगरेज की आत्मा बसती थी, उसकी जगह अब सर्टेशन-निर्मित सिंथेटिक कपड़ों ने

बाजार पर कब्जा कर लिया है। काला माल

महंगा और बिक्री के रास्ते सीमित हैं, लेकिन परिवर्तन की आहट सुनाई दे रही है। ई-कॉर्मस प्लॉटफॉर्म, सरकारी योजनाओं और डिजाइन में आधुनिकता के प्रयोग से ये बुनकर वैश्विक बाजार में अपनी जगह बना रहे हैं।

गलीचे, बैडशीट आदि के नियांत ने मध्यदूमपुर को मानचित्र पर चमका दिया है, जो गांव की सिर्फ स्थानीय बाजार तक सीमित था, आज उसके पहचान अंतर्धान वर्ष में लगता है।

भले ही अमरोहा का हथकरघा विश्व में अपना रंग बिखेर रहा है, लेकिन यदि हमने इस उद्योग को बचाने की कोशिश नहीं की तो केवल करघे का पहिया ही नहीं रुकेगा, बल्कि

रुक जाएगी वह सांस्कृतिक धारा, जो हमारी मिट्टी की महक को तुनिया तक पहुंचाती रही है। हथकरघे का संरक्षण असल में केवल कारीगरों की विचाराने की ओर नहीं रुकेगा, बल्कि हमने इस उद्योग को बचाने की कोशिश नहीं की तो केवल करघे का पहिया ही नहीं रुकेगा, बल्कि

रुक जाएगी वह सांस्कृतिक धारा, जो बाजार में केवल जटिल जीवन के माध्यम से भाव उत्पन्न किए, जिन्हें दर्शक अनुभव करता है। यदि कोई संदेश होता है, तो वह स्वतः प्रकट हो जाता है। संदेश को रस के माध्यम से आना चाहिए, न कि रस के स्थान पर। शिरेटर का उद्देश्य सही या गलत का निर्क्षण निकलना नहीं, बल्कि भाव उत्पन्न करना है। भाव के उत्पन्न होने पर दर्शक स्वयं अपने नैतिक निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होगा। रंगमच का शाश्वत उद्देश्य है, मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना। साझा अनुभव, साझा सांस और साझा हृदय।

## रंगमच का शाश्वत उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना

### कैसे खो रहा है आधुनिक रं





